लीक हटकर एक बेहतरीन फिल्म : असमिया फिल्म 'आमिस' के बारे में फिल्मकार अनुराग कश्यप का कहना था कि इस तरह की फिल्म हिंदुस्तानी दर्शकों ने आज तक नहीं देखी है।

अच्छी फिल्मों के लिए मौजूद है दुनिया का बाजार

असमिया फिल्म 'आमिस' अमेरिका के एक बड़े फिल्म फेस्टिवल में रिलीज हुई थी। भारत में भी फिल्म आलोचकों ने इसकी खूब तारीफ की। दरअसल, अच्छी फिल्मों के लिए पूरा विश्व एक बड़ा बाजार बन गया है। हां, शर्त यह है फिल्म अच्छी हो और दुनिया उसे अच्छी फिल्म माने। एक अच्छी फिल्म बनाकर इस बार दक्षिण कोरिया के फिल्मकार बोंग जून हो ने कमाल कर दिया। ऑस्कर अवार्ड के इतिहास में पहली बार हुआ है कि किसी विदेशी भाषा की फिल्म को बेस्ट फिल्म का अवार्ड मिला है। 'पैरासाइट' नाम की इस फिल्म में समाज में मौजूद वर्ग संघर्ष और आर्थिक असमानता के जरिए मानवीय मूल्यों और रिश्तों की कहानी मनोरंजक तरीके से कही गई है। सबसे पहले इस फिल्म ने प्रतिष्ठित कान फिल्म फेस्टिवल में सर्वोच्च पुरस्कार जीते थे।

अमिताभ पाराशर

हाल में असमिया भाषा की एक फिल्म चर्चा में थी। फिल्म का नाम था 'आमिस'। यह फिल्म अमेरिका के एक बड़े फिल्म फेस्टिवल (ट्राइबेका फिल्म फेस्टिवल) में पिछले साल नवंबर में रिलीज हुई थी। फिर यह हिंदुस्तान आई। आलोचकों ने फिल्म की तारीफ के पुल बांधे। हालांकि, कई ऐसी फिल्में होती हैं जो फिल्म आलोचकों और दर्शकों को एक साथ पसंद आती हैं लेकिन इस फिल्म की खासियत यह थी कि इसे एक अजूबे विषय वाली फिल्म बताया गया। फिल्मकार अनुराग कश्यप ने ट्वीट करके लोगों को बताया कि इस तरह की फिल्म हिंदुस्तानी दर्शकों ने आज तक देखी नहीं है।

खैर, इस फिल्म की कहानी क्या है? कहानी कुछ ऐसी है कि एक युवक, एक शादीशुदा लेकिन पति से नौकरी की वजह से अलग रह रही डॉक्टर के संपर्क में आता है। दोनों में दोस्ती होती है। युवक के दिमाग में महिला को प्रभावित करने का खेल चल रहा है। हालांकि औरत के दिमाग में ऐसा कुछ नहीं है। दोनों की रुचियां, खासकर खानपान को लेकर, एक सी हैं। दोनों मांसाहार के प्रेमी हैं। युवक, औरत को प्रभावित करने के लिए लगभग हर उपलब्ध मांस को खुद पका कर लजीज तरीके से पेश करता है, कई बार अपने हाथों से बनाकर भी। औरत बड़े चाव से खाती है। दोनों में लगाव बढ़ता है। एक समय ऐसा आता है जब युवक ने सभी किस्म के मांस उस औरत को खिला दिए हैं। अब नया खिलाने को कुछ नहीं है। तो, एक दिन वह युवक उस औरत को अपने ही शरीर का मांस काटकर और पका कर खिलाता है। इसके आगे भी कहानी है लेकिन यहां बताना जरूरी नहीं।

तो, कहानी का चौंकाने वाला कथ्य यह है कि प्रेम पाने के लिए युवक अपने शरीर का मांस पकाकर उस औरत को खिलाता है जिससे वह इकतरफा प्रेम करता है। संदेह नहीं, कि इस तरह के कथानक वाली कोई फिल्म पहले कभी यहां, हिंदुस्तानी सिनेमा में दिखी नहीं। 'आमिस' फिल्म के लेखक-निर्देशक भास्कर हजारिका हैं। उनके हिसाब से यह उनकी मौलिक कहानी है। लेकिन पिछले पुस्तक मेले से मैं एक किताब खरीद लाया। नाम है 'सिंध की लोक कथाएं!' इसमें एक कहानी है, 'सुहिणी मेहार'! यह दरअसल सुहिणी (युवती) और मेहार (युवक) की प्रेम कहानी है। मेहार रोज नियत समय पर अपनी प्रेमिका सुहिणी से मिलता था। वह रोज रात सुहिणी के लिए पकी हुई मछलियां लाता। दोनों प्रेम से खाते और प्रेम करते। एक दिन जोर का तूफान आया। मछुआरे मछलियां फांस न सके। वह अपनी प्रेमिका के पास खाली हाथ कैसे जाता। सो, उस दिन उसने अपनी जांघ चीर कर गोश्त निकाला, उसे पकाया और सुहिणी के पास ले आया!

यहां, इस सिंधी लोक कथा का हवाला इसलिए नहीं दिया ताकि हम भास्कर हजारिका की 'आमिस' की कथा के मौलिक होने पर संदेह जारी कर सकें। बल्कि इसका मकसद सिर्फ यह बताना है कि लोक कथाओं में मौलिक कहानियों की कमी का रोना रोने वाले हिंदी सिनेमा के लिए कितना मसाला छुपा हुआ है। खैर, अगर बात बॉलीवुड की करें तो कहना न होगा कि हाल के वर्षों में कुछ लेखकों, अभिनेताओं और फिल्मकारों ने ऐसे विषयों को छूने और उन पर फिल्में बनाने की कोशिश की है जो अभी तक अछूत माने जाते थे। इस पर ज्यादा अंदर जाने की जरूरत नहीं है। लेकिन जो गौर करने वाली बात है, वो यह कि इसी दौरान गैर हिंदी सिनेमा, हिंदी सिनेमा के मुकाबले कई गुना अधिक प्रयोगधर्मी हुआ है।

हम यहां नहीं कह रहे कि इस दौर से पहले हिंदी या गैर हिंदी सिनेमा ने विषय और शैली को लेकर प्रयोग नहीं किए हैं। बल्कि यह कहना चाह रहे हैं कि हाल में कथ्य और शैली को लेकर जिस तरह का काम देखने को मिल रहा है, वह पहले नहीं दिखा। मेरे हिसाब से इसके दो तीन बड़े कारण हैं। पहला बड़ा कारण तकनीक का सस्ता होना है। फिल्में बनाना पहले के मुकाबले काफी सस्ता हुआ है। कैमरा और एडिटिंग से जुड़े मशीन और तकनीक सस्ते हुए हैं। अब आप छोटे कैमरे और अपने लैपटॉप का इस्तेमाल करके भी फिल्म बना सकते हैं। लोग बना भी रहे हैं। दूसरी बात, अंतरराष्ट्रीय सिनेमा तक आम लोगों की पहुंच है। फिल्म समारोहों और डिजिटल प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध दुनिया भर की फिल्मों की सहज उपलब्धता ने नवोदित फिल्मकारों को बताया है कि दुनिया में किस-किस तरह की फिल्में बन रही हैं। तीसरी और महत्वपूर्ण बात यह भी है कि अच्छी फिल्मों के लिए पूरा विश्व एक बड़ा बाजार बन गया है। हां, यहां शर्त यह है फिल्म अच्छी हो और दुनिया उसे अच्छी फिल्म माने, न कि फिल्मकार खुद उसे अच्छी फिल्म मानता रहे... जैसा कि अक्सर होता है। खासकर हिंदुस्तान में जहां हर दूसरा फिल्मकार अपने को महानता के बिलकुल करीब पाता है।

अब आप देखिए, एक अच्छी फिल्म बनाकर इस बार दक्षिण कोरिया के फिल्मकार बोंग जून हो ने क्या कमाल किया। ऑस्कर अवार्ड के इतिहास में पहली बार हुआ है कि किसी विदेशी भाषा की फिल्म को बेस्ट फिल्म का अवार्ड मिला है। 'पैरासाइट' नाम की इस फिल्म में समाज में मौजूद वर्ग संघर्ष और आर्थिक असमानता के जरिए मानवीय मूल्यों और रिश्तों की कहानी मनोरंजक तरीके से कही गई है। सबसे पहले इस फिल्म ने प्रतिष्ठित कान फिल्म फेस्टिवल में सर्वोच्च पुरस्कार बटोरे। फिर उसके बाद अब दुनिया के सबसे बड़े फिल्म पुरस्कार समारोह में सबसे बड़ा सम्मान ले लिया।

यह जानिए कि ऑस्कर अवार्ड या कान फिल्म फेस्टिवल सिर्फ इसलिए महत्वपूर्ण नहीं होते कि वे बहुत बड़े फेस्टिवल और अवार्ड होते हैं। बल्कि इसलिए भी महत्वपूर्ण होते हैं कि यहां अवार्ड पाने वाली फिल्मों के लिए एक बड़ा बाजार खुल जाता है। इन फिल्मों का बिजनेस कई गुना बढ़ जाता है। यह भी गौर करिए कि अगर कहानी में दम हो, कहानी ऐसी हो जिसकी यूनिवर्सल अपील हो, तो फिर आज का दौर यह है कि आप किसी अच्छी फिल्म को दबा नहीं सकते। जैसा कि हमारे यहां प्रतिभाओं को दबाने का रिवाज है। लेकिन फिल्मों के साथ ऐसा नहीं किया जा सकता।

आमतौर पर हम देखते हैं कि हिंदुस्तानी फिल्मकार अपनी फिल्मों की मार्केटिंग ठीक न होने का रोना रोते हैं। खासकर, जब ऑस्कर जैसे अवार्ड की बात होती है वे कहेंगे, अरे क्या करें, फिल्में तो हम सही बनाते हैं लेकिन हमारी मार्केटिंग ठीक नहीं है। यह बहुत कुछ खिसियानी बिल्ली खम्भा नोचे जैसा मामला है। जैसा कि पहले कहा, आज के दौर में अच्छी फिल्म को दबाना संभव नहीं है। चाहे वह दुनिया के किसी कोने में बनी हो। किसी भाषा में बनी हो।

आप देखिए कि असम की ही एक महिला फिल्मकार ने 'विलेज रॉकस्टार्स' और 'बुलबुल कैन सिंग' जैसी बिलकुल छोटी (बजट पंद्रह लाख से भी नीचे) फिल्में बनाई और दुनिया भर के नामी फिल्म फेस्टिवल में उन फिल्मों को लेकर घूमीं। भारत की तरफ से 'विलेज रॉकस्टार्स' को विदेशी भाषा के ऑस्कर अवार्ड के लिए आधिकारिक एंट्री के तौर पर भेजा गया था। लेकिन फिल्म को कोई अवार्ड नहीं मिला। यहां अवार्ड न मिलने का कारण यह नहीं था की हिंदुस्तानी फिल्मकारों की मार्केटिंग कमजोर है बल्कि कारण यह था कि उस साल इस असमिया भाषा की फिल्म के मुकाबले कई मजबूत विदेशी फिल्में भी ऑस्कर अवार्ड के लिए मैदान में थीं।

तो, यह भी एक फैशन जैसा हो गया है यह कहना कि हमारी फिल्में मार्केटिंग और बजट की कमी की वजह से मारी जाती हैं। ऐसा बिलकुल नहीं है। असली बात यह है कि आप पूरी दुनिया के सामने कौन सी ऐसी मौलिक चीज कहते या दिखाते हैं जो उन्होंने इससे पहले देखी नहीं है। 'पैरासाइट' ने यह काम किया है। दुर्भाग्य से भारतीय या हिंदी सिनेमा अभी तक यह काम नहीं कर सका है।

अंत में : हाल के वर्षों में, एक फिल्म जो ऑस्कर अवार्ड के बिल्कुल करीब पहुंच गई थी, वह थी रितेश बत्रा की 'लंच बॉक्स'। दुनिया के कई फिल्म समारोहों में इस फिल्म को लोगों ने पसंद किया। लेकिन भारत की तरफ से ऑस्कर प्रविष्टि के तौर पर भेजने वाली समिति ने इस फिल्म को आपसी राजनीति और अज्ञानता की वजह से भेजा ही नहीं!

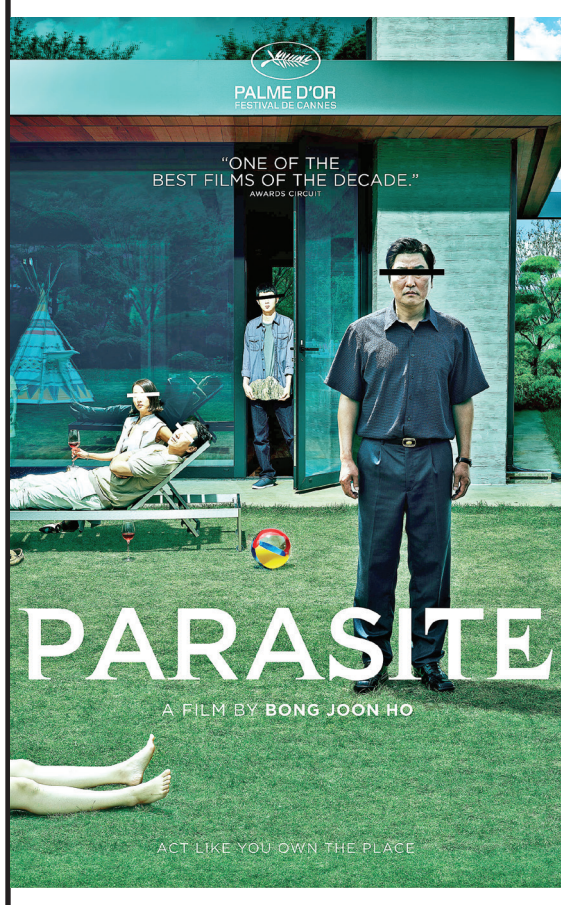

लीक से हटकर एक बेहतरीन फिल्म : दक्षिण कोरिया की फिल्म 'पैरासाइट' की इस बार के ऑस्कर अवार्ड समारोह में धूम रही और इसने दुनिया का ध्यान अपनी ओर खींचा।

रक्षा तकनीक के साथ-साथ भारत हिंद-प्रशांत क्षेत्र में अमेरिका के सामरिक सहयोगी के रूप में उभर रहा है और 'स्वतंत्र विदेश नीति' की हमारी पहचान खत्म हो रही है। भारत एक तरफ अमेरिका के साथ सामरिक समझौते कर रहा है, वहीं उसकी रूस से दूरी बढ़ती नजर आ रही है। यानी धीरे-धीरे भारत का झुकाव सायास या अनायास रूसी तकनीक के स्थान पर अमेरिकी तकनीक पर होता जा रहा है जो महंगी है और जिसके साथ शर्तें लगी होती हैं। रक्षा तकनीक में भारत ने अमेरिका, फ्रांस और इसरायल को अपना साझीदार बनाया है। ट्रंप की भारत यात्रा के ठीक पहले की खबर है कि भारत और अमेरिका के बीच करीब 3.5 अरब डॉलर के रक्षा उपकरणों की खरीद के प्रस्ताव तैयार हैं।

अमेरिकी खेमे में जाता भारत

प्रमोद जोशी

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की भारत यात्रा का काफी हद तक केवल चाक्षुष (ऑप्टिकल) महत्व है। चुनाव के साल में ट्रंप अपने देशवासियों को दिखाना चाहते हैं कि वह अमेरिका के बाहर कितने लोकप्रिय हैं। उनके स्वागत की जैसी व्यवस्था अहमदाबाद में की गई, वह भी यही बताती है। इस स्वागत-प्रदर्शन से हटकर भी भारत और अमेरिका के रिश्तों के संदर्भ में इस यात्रा का महत्व है। आमतौर पर ट्रंप द्विपक्षीय यात्राओं पर नहीं जाते। उनकी दिलचस्पी या तो बहुपक्षीय शिखर सम्मेलनों में होती है या ऐसी द्विपक्षीय बैठकों में, जिनमें किसी समस्या के बड़े समाधान को हासिल करने की कोशिश हो। पिछले साल के गणतंत्र दिवस पर भारत आने का प्रस्ताव ठुकरा कर वह भारत को एक राजनयिक झटका लगा चुके हैं। बहरहाल नाटकीयता अपनी जगह है, दोनों देशों के रिश्तों का महत्व है।

इस यात्रा के दौरान पर्यवेक्षकों का ध्यान कारोबारी रिश्तों पर रहेगा। माना जा रहा है कि चीन भारत का सबसे बड़ा कारोबारी सहयोगी है, पर अब अमेरिका ने उसे पीछे छोड़ दिया है। सन 1999 में दोनों देशों के बीच जो कारोबार 16 अरब डॉलर का था, वह 2018 में 142 अरब डॉलर का हो गया। पिछले दो वर्षों में अमेरिका ने भारतीय माल पर टैक्स बढ़ाया है और भारत को प्राप्त जनरलाइज्ड सिस्टम ऑफ प्रिफरेंस (जीएसपी) के तहत मिलने वाली सुविधाएं खत्म कर दी हैं, पर दोनों देशों के सामरिक रिश्तों में गर्मजोशी है। यह तेजी पिछले दो दशकों में आई है। इसका एक बड़ा कारण शीतयुद्ध के बाद की स्थितियां हैं। अफगानिस्तान में तालिबान और अलकायदा के उदय के बाद 9/11 की परिघटना ने एक तरफ जेहादी राजनीति के कारण दोनों देशों को करीब आने को प्रेरित किया, दूसरी ओर चीन के उदय के कारण अमेरिका को खासतौर से हिंद-प्रशांत क्षेत्र में भारत के करीब आने की जरूरत महसूस हुई है। सन 1998 में नाभिकीय परीक्षण के बाद भारतीय रक्षा तकनीक पर अमेरिका ने कई तरह के प्रतिबंध लगाए थे। समय के साथ वे प्रतिबंध न सिर्फ हटे बल्कि जुलाई, 2005 में अमेरिका के साथ हुए सामरिक समझौते के बाद रिश्तों में गुणात्मक बदलाव आया है। और अब रक्षा तकनीक के साथ-साथ भारत हिंद-प्रशांत क्षेत्र में अमेरिका के सामरिक सहयोगी के रूप में उभर रहा है और 'स्वतंत्र विदेश नीति' की हमारी पहचान खत्म हो रही है।

स्वाभाविक दोस्ती

अमेरिका में राष्ट्रपति चाहे डेमोक्रेटिक पार्टी के रहे हों या रिपब्लिकन पार्टी के और संसद में किसी भी पार्टी का बहुमत रहा हो भारत के साथ रक्षा सहयोग को पूरा समर्थन मिला है। परिस्थितियां भी ऐसी बनीं कि अमेरिका के रिश्ते अपने पूर्व सहयोगी पाकिस्तान के साथ बिगड़ते गए। दूसरी तरफ सन 1962 के युद्ध के बाद से भारत और चीन के रिश्तों में जो तल्खी पैदा हुई, वह खत्म होती नजर नहीं आ रही है। चीन-पाकिस्तान गठजोड़ की वजह से भी दोनों देश करीब आए हैं। इस इलाके में भारत ही अकेला देश है, जहां आधुनिक लोकतांत्रिक इस पृष्ठभूमि में जापान और ऑस्ट्रेलिया भी कमोबेश अपने-अपने कारणों से चीन से प्रतिस्पर्धा रखते हैं। दक्षिण एशिया के शेष देशों से लेकर सुदूर पूर्व तक के इलाके के साथ भारत के ऐतिहासिक रिश्ते रहे हैं। बढ़ते समुद्री व्यापार के मद्देनज़र भारत पर हिंद महासागर से लेकर प्रशांत तक के क्षेत्र में सुरक्षा की जिम्मेदारी भी आ गई है। एक समय तक राजनयिक भाषा में जिस भौगोलिक क्षेत्र को एशिया-प्रशांत कहा जाता था, उसे अब हिंद-प्रशांत का नाम दिया गया है।

रक्षा तकनीक

भारत एक तरफ अमेरिका के साथ सामरिक समझौते कर रहा है, वहीं उसकी रूस से दूरी बढ़ती नजर आ रही हैं। पर यह इतनी सरल बात नहीं है, जितनी नजर आ रही है। भारत की सामरिक शक्ति का तीन चौथाई भाग रूसी तकनीक पर आश्रित रहा है। भले ही अब उसमें कमी आई हो, पर वह एकदम से समाप्त भी नहीं हो सकता। आज भी भारत को जो तकनीक चाहिए, वह पूरी तरह अमेरिकी भरोसे पर पूरी नहीं हो सकती। मसलन हवाई हमलों से रक्षा के लिए भारत जिस एस-400 प्रणाली को खरीद रहा है, उसके समकक्ष अमेरिकी प्रणाली एक तो उतनी प्रभावशाली नहीं है, दूसरे वह काफी महंगी है। भारत ने अमेरिका के सामने यही दलील दी है कि हमारे सामने विकल्प क्या है?

ट्रंप की इस यात्रा के ठीक पहले की खबर है कि दोनों देशों के बीच करीब 3.5 अरब डॉलर के रक्षा उपकरणों की खरीद के प्रस्ताव तैयार हैं। दिल्ली की सुरक्षा के लिए भारत अमेरिका की एनएएएमएस-2 हवाई सुरक्षा प्रणाली खरीदने जा रहा है। दिल्ली के सुरक्षा कवच की तीन परतें तैयार हो रही हैं। सबसे भीतर अमेरिकी प्रणाली, उसके बाहर भारत की 'आकाश' प्रणाली और उसके बाहर रूस की एस-400 प्रणाली। यह एक नया सामरिक गणित है, जो भारतीय विदेश नीति की दिशा को भी बताता है। पर इसमें दो राय नहीं कि भारत सामरिक दृष्टि से अब अमेरिकी खेमे में है।

अमेरिकी पहलकदमी

सन 2007 से अब तक भारत और अमेरिका के बीच करीब 20 अरब डॉलर के रक्षा सौदे हो चुके हैं। धीरे-धीरे भारत का झुकाव सायास या अनायास रूसी तकनीक के स्थान पर अमेरिकी तकनीक पर होता जा रहा है जो महंगी है और जिसके साथ शर्तें लगी होती हैं। फिर भी वह विश्वसनीय है। रक्षा तकनीक में भारत ने अमेरिका, फ्रांस और इसरायल को अपना साझीदार बनाया है। हाल में लखनऊ में हुए डेफएक्सपो-2020 में अमेरिका ने सबसे ज्यादा बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। एमएमआरसीए कार्यक्रम के तहत राफेल सौदा रद्द होने के बाद अब अमेरिका चाहता है कि उसके एफ-21 या एफए-18 विमान को भारत स्वीकार करे। हाल में खबर है कि अमेरिका ने बोइंग के लड़ाकू विमान एफ-15ईएक्स की पेशकश भी भारत से की है। नौसेना के लिए 57 लड़ाकू विमानों का सौदा भी शायद अमेरिका को मिलेगा। नौसेना के लिए 24 एमएच-60 हेलिकॉप्टर और थलसेना के लिए छह अपाचे अटैक हेलिकॉप्टरों की खरीद के सौदे पर सुरक्षा से जुड़ी कैबिनेट कमेटी की स्वीकृति मिलने ही वाली है और संभव है कि इन पंक्तियों के प्रकाशन तक मिल चुकी हो।

'टू प्लस टू' वार्ता

गत दिसंबर में दोनों देशों के बीच दूसरी 'टू प्लस टू' वार्ता हुई, जिसमें भारत की तरफ से राजनाथ सिंह और एस. जयशंकर तथा अमेरिका की तरफ से माइकेल पॉम्पियो तथा मार्क टी एस्पर शामिल हुए। हालांकि 'टू प्लस टू वार्ता' का दायरा काफी बड़ा है, पर मूलतः इसमें टकराव के बिंदुओं के समाधान की कोशिश की जाती है। इसमें रूस और ईरान के मुद्दे भी उठे हैं। कुछ समय पहले दोनों देशों के बीच सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण कम्युनिकेशंस, कंपैटिबिलिटी, सिक्योरिटी एग्रीमेंट (कोमकासा) होने के बाद सैनिक समन्वय और सहयोग की राहें खुली हैं। यह समझौता 10 साल के लिए हुआ है। इसके माध्यम से अमेरिकी नौसेना की सेंट्रल कमांड और भारतीय नौसेना के बीच संपर्क कायम हुआ है। भारत ने अपना एक अटैशे (प्रतिनिधि) बहरीन में नियुक्त किया है, जो अमेरिकी सेना के साथ समन्वय बनाएगा।

चीन की 'बेल्ट एंड रोड' पहल के समांतर अमेरिका ने ब्लू डॉट नेटवर्क (बीडीएन) पहल शुरू की है, जिसमें जापान और ऑस्ट्रेलिया को शामिल किया गया है। इसका उद्देश्य हिंद-प्रशांत क्षेत्र में इंफ्रास्ट्रक्चर के लिए निजी निवेश को बढ़ावा देना है। भारत के साथ चारों देशों की चतुष्कोणीय सुरक्षा योजना 'क्वाड' धीरे-धीरे आगे बढ़ रही है।

अमेरिका चाहता है कि उसके एफ-21 या एफए-18 विमान को भारत स्वीकार करे। हाल में खबर है कि अमेरिका ने बोइंग के लड़ाकू विमान एफ-15ईएक्स की पेशकश भी भारत से की है। नौसेना के लिए 57 लड़ाकू विमानों का सौदा भी शायद अमेरिका को मिलेगा।